

HISTORY (H)

B.A Part-I Paper-II

दोन प्रथम विश्व के बाद इंग्लैंड का इटली से संबंध
 दोन प्रथम विश्व युद्ध के बाद कुछ समय तक इटली व इंग्लैंड
 के संबंध सामान्य रहे। 1925 ई में दोनों देशों ने लोकार्ने
 सम्झौते की रक्षा का आश्वासन दिया। 1935 ई में मी
 स्ट्रेसो सम्मेलन में इंग्लैंड और इटली दोनों ने जर्मनी का
 शाहीकरण के प्रति पौर विरोध किया था, किन्तु
 (अबोलिनिंग के प्रश्न पर दोनों के संबंध गंभीर
 हो गए। 1935 ई में जब इटली ने अबोलिनिंग पर
 आक्रमण करके उस पर अधिकार कर लिया तो इंग्लैंड
 द्वारा इटली के इस कार्य का विरोध किया गया। इंग्लैंड
 की इस नीति से इटली का झुकाव जर्मनी की होने लगा।
 इंग्लैंड की अबोलिनिंग के संबंध में इटली के प्रति नीति
 अनिश्चित एवं अस्पष्ट थी। शुरू में उसने इटली के विरुद्ध
 आर्थिक प्रतिबंधों का समर्थन किया किन्तु बाद में इस
 मन-से कि कभी जर्मनी से मिल न जाए उसने इटली के
 प्रति भी मुहूर्त की नीति का सहारा लिया और लेखापक
 योजना के द्वारा इटली को अबोलिनिंग का अधिकांश
 प्रदेश देने की बात की किन्तु इस योजना के कार्यान्वित
 करने से पहले ही यह योजना फलर हो गई। इंग्लैंड की
 गहरा दार इसका खोले विरोध किया गया परिणामस्वरूप
 इंग्लैंड की तत्कालीन वैदेशिक मंत्री स्टुअर्ट बेर का त्याग
 पद देने के लिए विवश हो गया। अबोलिनिंग के विषय
 में इंग्लैंड की नीति निम्न असफल प्रमाणित हुई।

अबोलिनिंग के पतन के बाद इंग्लैंड ने
 इटली से गंभीर संबंध बनाने के लिए अल्प प्रयास किए।
 1937 ई में इटली व इंग्लैंड ने मूम्बई समार में गवाहिरी
 वगैरह रसों की घोषणा की। 1938 ई में दोनों देशों के मध्य
 फ्रान्स एक समझौता किया गया इस समझौते के द्वारा इंग्लैंड
 ने अबोलिनिंग पर इटली का आधिपत्य स्वीकार किया।
 इस सब प्रयासों के बाद भी इंग्लैंड और इटली के संबंध
 गंभीर नहीं हो सके। जनवरी 1939 ई में चेम्बेर्लेन तथा
 हेन्री फोक्स पारस्परिक संधि ब्रूट करने हेतु सोमवार पर
 उन्हें विशेष सम्मान न मिल सके क्योंकि इटली तत्काल ही
 फ्रान्स में शामिल हो चुका था।

समाप्त